पशुपालक कैलेंडर

SOUTH ASIA

Pro Poor Livestock Policy Programme

A joint initiative of NDDB and FAO

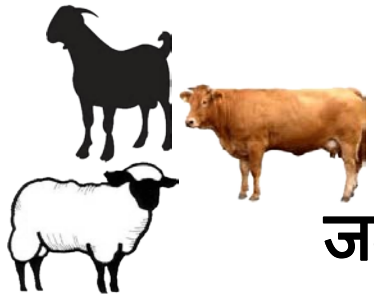

पशुपालक कैलेंडर

जनवरी में ध्यान देने वाली बातें

- ❖ कश्मीर व हिमाचल प्रदेश में बर्फबारी का सीधा असर, सर्द हवाओं व पाला पड़ने के रूप में, पड़ता है, अतः पशुओं को शीत-लहर से बचाने के आवश्यक उपाय कर लें।
- ❖ पाला पड़ने की संभावना हो, तो कृत्रिम प्रकाश या गर्मी का प्रबन्ध अवश्य करें।
- ❖ कमज़ोर व रोगी पशुओं को बोरी की झूल बनाकर ओढ़ायें। सर्दी से बचने के लिए रात के समय पशुओं को छत के नीचे या घास-फूस के छप्पर में बांध कर रखें।
- ❖ पशुओं को संकड़े/नम स्थान में बन्द करने से, एवं धुआं आदि से गर्मी पहुँचाने की कोशिश, उनके न्यूमोनिया से पीड़ित होने की संभावना को अधिक बढ़ाती हैं।
- ❖ पशुओं को बांटा और पानी गुनगुना कर के दें।
- ❖ दुधारू पशुओं को तेल व गुड़ देने से भी शरीर का तापक्रम सामान्य बनाये रखने में सहायता मिलती है।
- ❖ अभी से चारे का संग्रहण अथवा उसको सही समय पर खरीद कर रखें, साथ ही पशुओं में लवणों की कमी नहीं होने पाये, इस हेतु लवण मिश्रण निर्धारित मात्रा में दाने या बांटे में मिला कर दें।
- ❖ अन्तः परजीवीनाशक घोल या दवा देने का सही समय भी यही है।
- ❖ पशुओं को बाह्य परजीवियों से बचाने के लिये पशु-शाला में फर्श, दीवार आदि साफ रखें। अतः निर्गुण्डी, तुलसी, या नींबू घास का गुलदस्ता पशु-शाला में लटका दिया जाए, क्योंकि इसकी गंध बाह्य परजीवियों को दूर रखती है। पशु-शाला को कीटाणुरहित करने के लिए नीम तेल आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें।
- ❖ पशु-पालकों को चाहिए कि अगर मुँहपका-खुरपका रोग (Foot and Mouth Disease), पी.पी.आर., गलघोंटू (Hemorrhagic Septicemia), फड़किया (Enterotoxemia), लंगड़ा बुखार (Black Quarter) आदि रोगों से बचाव के टीके नहीं लगवाएं हों, तो अभी लगवा लें। विशेष रूप से मेमनों को फड़किया का टीका लगवाएं।
- ❖ रिजका व बरसीम में 20-30 दिन, एवं जई में 20-22 दिन के अन्तराल पर आवश्यकता अनुसार सिंचाई करते रहें।

SOUTH ASIA
Pro Poor Livestock Policy Programme
A joint initiative of NDDB and FAO

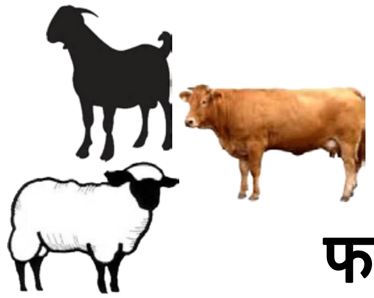

पशुपालक कैलेंडर

फरवरी में ध्यान देने वाली बातें

- मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार फरवरी माह में अनेक स्थानों पर वर्षा होने की संभावना रहती है, अतः पशुओं को भीगने से बचाएं एवं बादल हटने पर सर्दी के बढ़ने के आसार को देखते हुए पर्याप्त बचाव के उपाय करें।
- पिछले माह दिये गए सर्दी से बचाव के उपाय इस माह भी जारी रखें।
- जो पशु जनवरी माह में नियन्त्रित प्रजनन कार्यक्रम के तहत उपचार में थे, उनका अनुसरण फरवरी माह में भी रखा जाए ताकि सभी पशु इस महीने तक गर्भित हो जाएं।
- नवजात बछड़े-बछड़ियों को अन्तः परजीवी नाशक नियमित रूप से दें।
- मेमनों को पी.पी.आर. का टीका लगवाएं।
- दुधारू पशुओं को थनैला रोग (Mastitis) से बचाने के लिए, उनका दूध पूरा व मुट्ठी बांध कर निकालें।
- रिजका व बरसीम एवं जई की सिंचाई क्रमशः 12-14 एवं 18-20 दिन के अंतराल पर करें।
- बरसीम, रिजका एवं जई को सूखा चारा या अचार (साईलेज) के रूप में एकत्रित कर भविष्य में संभावित चारे की कमी के समय के लिए सुरक्षित रखें।

SOUTH ASIA
Pro Poor Livestock Policy Programme
A joint initiative of NDDB and FAO

पशुपालक कैलेंडर

मार्च में ध्यान देने वाली बातें

- इस माह से गर्मी में होने वाले रोगों के प्रति सावधानी रखनी होगी।
- यदि मच्छर, मक्खी, चींचड़, आदि, जीवों की संख्या में वृद्धि हो रही हो, तो इनसे फैलने वाले रोगों से बचाव करना आवश्यक है।
- आने वाले समय में पशुओं में बाँझपन एवं फुराव (Johne's disease), आदि रोग भी होते हैं, अतः ऐसे में पशुओं की तुरन्त चिकित्सा करवाएं।
- यदि दूध उत्पादन में कमी हो रही हो, तो पशु चिकित्सक द्वारा दूध और पेशाब, दोनों की जाँच करवाएं।
- बरसीम-रिजका एवं जई की सिंचाइ 10 दिन एवं 12-14 दिन क्रमशः के अन्तराल पर करें।
- ग्रीष्मकाल में हरे चारे हेतु मक्का, बाजरा एवं ज्वार की बोवाई करें।
- बहुऋतुजीवी चारा घास जैसे हाईब्रिड नेपियर, गिनी घास, इत्यादि की रोपाई पहले से तैयार खेतों में करें।
- हरे चारे से साईलेज तैयार करें।
- ब्याँने वाले पशुओं को प्रसूति बुखार (Puerperal Fever) से बचाने के लिए खनिज मिश्रण 50-60 ग्राम प्रतिदिन दें।

SOUTH ASIA
Pro Poor Livestock Policy Programme
A joint initiative of NDDB and FAO

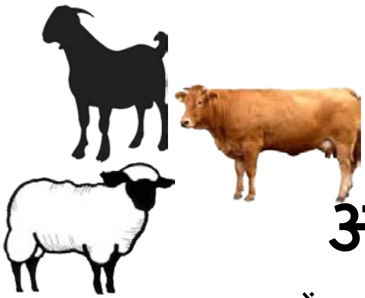

पशुपालक कैलेंडर

अप्रैल में ध्यान देने वाली बातें

- इस माह में अधिक तापक्रम होने की संभावना रहती है।
- पशुओं में जल व लवण की कमी, भूख कम होना, एवं कम उत्पादन, अधिक तापक्रम के प्रमुख प्रभाव होते हैं, अतः पशुओं को अत्यधिक तापक्रम से बचाने के उपाय करें।
- भार ढोने वाले पशुओं को दोपहर से शाम चार बजे तक छाया वाले एवं हवादार स्थान में आराम करने दें।
- पीने के पानी के इंतज़ाम पर भी ध्यान दें। पानी की कुण्डी साफ रखें। पशुओं को दिन में कम से कम चार बार पानी पिलाने का प्रयास करें।
- कुछ मादा पशुओं में गर्मी (ताव में आना) के लक्षण दिन में कम तथा रात्रि में अधिक प्रदर्शित होते हैं, अतः पशुपालक इसका ध्यान रखें।
- थनैला रोग (Mastitis) की पहचान और निदान के उपाय करें।
- मेमनों को फड़किया (Enterotoxemia) व भेड़ चेचक रोग (Sheep Pox) का टीका लगवाएं।
- गाभिन (छः माह से अधिक) पशुओं को अतिरिक्त आहार दें।
- चारागाहों में घास न्यूनतम स्तर पर होती है, तथा पशुपोषण भी वर्षा न होने तक अपेक्षाकृत कमज़ोर रहता है। ऐसे में लवण, विशेषकर फॉसफोरस की कमी के कारण पशुओं में 'पाइका' (Pica – depraved appetite) नामक रोग के लक्षण नज़र आने लगते हैं, अतः बाँटा-चाट (Mineral block) में लवण मिश्रण अवश्य मिलायें।
- सामुदायिक प्रयासों से सुनिश्चित करें कि मृत पशु, हड्डी, चमड़ा, कंकाल आदि चारागाह के रास्तों एवं उन स्थानों पर इक्ट्ठा नहीं होने पाए जहाँ से पशुओं का रोज़ाना आना जाना रहता है।
- ऐसे स्थानों की तारबंदी/बाड़बंदी कर पशुओं को रोकें, क्योंकि मृत पशु के अवशेषों को खाने व चबाने से प्राण-घातक रोग 'बोचुलिज़्म' (Botulism) हो सकता है, जिसका कोई उपचार नहीं है।
- चारे के लिए बोई गई मक्का, बाजरा एवं ज्वार की कटाई 45-50 दिन की अवस्था में करें।

SOUTH ASIA
Pro Poor Livestock Policy Programme
A joint initiative of NDDB and FAO

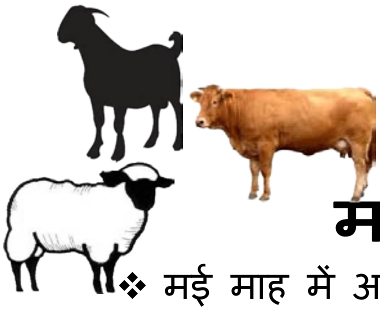

पशुपालक कैलेंडर

मई में ध्यान देने वाली बातें

- मई माह में अधिक तापक्रम होने की संभावना रहती है, साथ ही कुछ स्थानों पर आँधी-तूफान के साथ वर्षा भी प्रायः होती है।
- गर्मी-जनित रोगों के फैलने से पशुओं में तापघात, जल व लवण की कमी, भूख कम होना, एवं कम उत्पादन जैसे लक्षण देखने को मिलते हैं।
- पशुओं को धूप व लू से बचाने के उपाय करें।
- चारे का संग्रहण, व उसकी समय पर खरीद कर सकें, ऐसे उपायों के बारे में सोचें।
- पशुओं में लवणों की कमी नहीं होने पाए, इस हेतु लवण-मिश्रण निर्धारित मात्रा में दाने या बाँटे में मिलाकर दें।
- पशुओं के आहार में मौसम के अनुसार आवश्यक बदलाव करें। गेहूँ का चोकर और जौ की मात्रा बढ़ाएं।
- पशुओं को संतुलित आहार दें, जिससे उनकी दुग्ध उत्पादन क्षमता बनी रहे।
- चिंचड़ों व पेट के कीड़ों से पशुओं के बचाव का उचित प्रबन्ध करें।
- चारे के लिये बोई गई चरी, मक्का एवं बहुऋतुजीवी चारा घासों की कटाई करें।
- इस माह में भेड़ के ऊन कतरने का कार्य करें।

पशुपालक कैलेंडर

जून में ध्यान देने वाली बातें

❖ जून माह में अधिकतम तापक्रम बढ़ने से पशुओं में तापघात, जल व लवण की कमी, भूख कम होना, एवं कम उत्पादन जैसे लक्षण देखने को मिलते हैं ।

❖ पिछले माह के अनुसार पशुओं को अत्यधिक तापक्रम, धूप व लू से बचाने के उपाय करें।

❖ गर्मी से बचाव हेतु पशुओं को वृक्षों की छाया में रखें।

❖ पिछले माह में भेड़ के ऊन कतरने का कार्य न किया हो तो इस माह में कर लें।

❖ गलघोंटु (Hemorrhagic Septicemia), एवं लंगड़ा बुखार (Black Quarter) बीमारी से बचाव के टीके अवश्य लगवाएं।

❖ चारागाह में चरने वाले पशुओं की सुबह, शाम या रात्री में चराई करें, तथा भरपूर पानी भी पिलाएं।

❖ 'पाइका' (Pica – depraved appetite) ग्रस्त पशुओं को पेट के कीड़े मारने की दवा देकर लवण-मिश्रित आहार प्रदान करें, ताकि 'पाइका' रोग के लक्षणों से छुटकारा प्राप्त हो।

❖ पशुओं को हरा चारा नहीं मिल रहा हो तो 'विटामिन ए' के इंजेक्शन लगवाएं।

❖ पशुओं को विटामिन एवं लवण-मिश्रित आहार दें।

❖ गर्मि के मौसम में पैदा की गई ज्वार में जहरीले पदार्थ हो सकते हैं, जो पशुओं के लिए हानिकारक हैं। अप्रैल में बीजाई की गई ज्वार खिलाने से पहले 2-3 बार पानी अवश्य पिलाएं।

❖ घास की रोपाई हेतु खेत की तैयारी करें।

❖ मुँहपका-खुरपका (Foot and Mouth Disease) रोग, गलघोंटू, ठप्पा रोग, फड़किया (Enterotoxemia), आदि के टीके लगवा लें।

❖ भेड़ के शरीर को ऊन कतरने के 21 दिन बाद, बाहय परजीवियों से बचाने के लिये, किटाणु-नाषक घोल से भिगोएं।

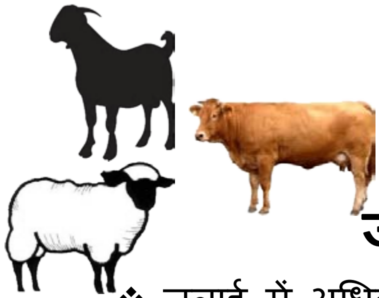

पशुपालक कैलेंडर

जुलाई में ध्यान देने वाली बातें

- जुलाई में अधिकांश हिस्सों में वर्षा ऋतु आने की सम्भावना रहती है, तथा कुछ स्थानों पर आँधी-तूफान के साथ वर्षा होती है। ऐसे में गर्मी व नमी जनित रोगों से पशुओं को बचाएं।
- कीचड़, बाढ़, आदि का प्रभाव पशुओं पर न्यूनतम हो, ऐसे उपाय अभी से करें।
- वर्षाजनित रोगों से बचाव के उपाय नहीं भूलें; अंतः परजीवी व कृमि-नाषक घोल या दवा देने का समय भी यही है।
- अगर मुँहपका-खुरपका (Foot and Mouth Disease) रोग, गलघोंटू (Hemorrhagic Septicemia), ठप्पा (Black Quarter) रोग, फड़किया (Enterotoxemia) रोग आदि के टीके नहीं लगवाए हों, तो कृपया अभी लगवा लें। विशेष रूप से व्यस्क भेड़ और बकरियों को फड़किया रोग का टीका लगवाएं।
- पशु ब्याँने के दो घण्टे के अन्दर नवजात बछड़े व बछड़ियों को खीस (प्रथम-स्तन्य) अवश्य पिलाएं।
- ज्यादा दूध देने वाले पशुओं के ब्याँने के 7-8 दिन तक दुग्ध ज्वर(Milk Fever) होने की संभावना अधिक होती है। इस रोग से पशु को बचाने के लिए उसे गाभिन अवस्था में उचित मात्रा में सूर्य की रोशनी मिलनी चाहिए।साथ ही गर्भावस्था के अंतिम माह में पशु चिकित्सक द्वारा लगाया जाने वाला विटामिन ई व सिलेनियम का टिका प्रसव उपरांत होने वाली कठिनाईयाँ, जैसे की जेर का न गिरना, इत्यादि में लाभदायक होता है, अतः पानी के साथ 5 से 10 ग्राम चूना मिलाकर, या कैल्शियम, फास्फोरस का घोल 70 से 100 मि.ली. प्रतिदिन भी दिया जा सकता है।
- सिंचित हरे चारे के खेतों में पशुओं को नहीं जाने दें, क्योंकि लम्बी गर्मी के बाद अचानक वर्षा से जो हरे चारे की बढ़वार होती है उसमें साइनाइड जहर पैदा होने से चारा जहरीला हो जाता है। यह ज्वार की फसल में विशेष तौर पर होता है। ऐसी फसल को समय पूर्व कच्ची अवस्था में ना काटें, और न ही पशुओं को खिलाएं।
- बहुऋतुजीवी चारा घासों की रोपाई करें, और बढ़ रही घास की कटाई 40 से 50 दिनों के अंतर पर करते रहें। संतुलित पशु-आहार के लिए मक्का, ज्वार, बाजरे की, लोबिया व ग्वार के साथ मिला कर बिजाई करें।
- भेड़ के शरीर को ऊन कतरने के 21 दिन बाद, बाह्य परजीवियों से बचाने के लिये, किटाणु-नाषक घोल से भिगोएं।

पशुपालक कैलेंडर

अगस्त में ध्यान देने वाली बातें

- ❖ पशुओं को अत्यधिक तापक्रम एवं धूप से बचाने के उपाय करें।
- ❖ मुँहपका-खुरपका (Foot and Mouth Disease) रोग, गलघोंटू (Hemorrhagic Septicemia), ठप्पा (Black Quarter) रोग, फड़किया (Enterotoxemia) रोग आदि के टीके नहीं लगवाएं हो, तो कृपया अभी लगवा लें।
- ❖ मुँहपका-खुरपका रोग से ग्रस्त पशुओं को अलग स्थान अथवा बाड़े में बांधें, ताकि संक्रमण स्वस्थ पशुओं में नहीं हो। यदि आस-पास के पशुओं में यह रोग फैल रहा है, तो अपने पशुओं का सीधा संपर्क रोगी पशुओं से नहीं होने दें।
- ❖ मुँहपका-खुरपका रोग से ग्रस्त गाय का दूध बछड़ों को नहीं पीनें दें, क्योंकि उनमें इस रोग के कारण हृदयघात से मृत्यु हो सकती हैं।
- ❖ रोगग्रस्त पशुओं के मुंह, खुर व थनों के छालों को लाल दवा (Potassium permanganate) का 1 प्रतिशत घोल बना कर धोयें। गलघोंटू व ठप्पा रोग के लक्षण दिखते ही तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
- ❖ बोचूलिज्म (Botulism) की रोकथाम के लिए मृत पशुओं के अवशेषों को चारागाह से अवश्य हटाएं।
- ❖ भेड़ बकरियों में पी.पी.आर., भेड़ चेचक (Sheep Pox) व फड़किया रोग होने की संभावना रहती है, अतः इन रोगों से बचाव के टीके लगवा लें।
- ❖ पशुओं को अन्तः परजीवी तथा कृमि-नाशक दवाई पशु चिकित्सक से परामर्श करके सही मात्रा में अवश्य दें।
- ❖ पशुओं को बाह्य परजीवी से बचाने के लिए उपयुक्त दवाई, पशु चिकित्सक से परामर्श करके अवश्य दिलवाएं। पशुशाला में फर्श, दीवार आदि साफ रखें, अतः निर्गुण्डी, तुलसी, या नींबू घास का गुलदस्ता पशु-शाला में लटका दिया जाए, क्योंकि इसकी गंध बाह्य परजीवियों को दूर रखती है। पशु-शाला को कीटाणुरहित करने के लिए नीम तेल आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें।
- ❖ बरसात के मौसम में पशु घरों को सूखा रखें, एवं मक्खी रहित करने के लिए नीलगिरि या निम्बू घास के तेल का छिड़काव करते रहें।
- ❖ पशुओं को खनिज मिश्रण 30-50 ग्राम प्रतिदिन दें, जिससे पशु की दूध उत्पादन और शारीरिक क्षमता बनी रहें।

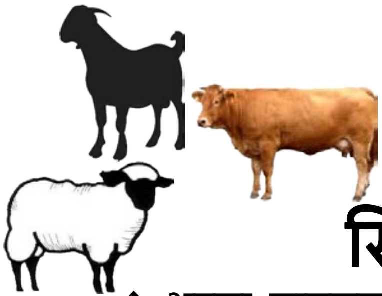

पशुपालक कैलेंडर

सितंबर में ध्यान देने वाली बातें

- अच्छा मानसून होने पर पशु-शाला में जल भराव समस्या व आद्रता जनित रोगों के संक्रमण की प्रबल सम्भावना रहती है, अतः वर्षा जल निकासी का समुचित प्रबंधन करें।
- पशुओं को यथासंभव सूखे व ऊँचे स्थान पर रखें।
- चारे का पर्याप्त और उपयुक्त भण्डारण सूखे व ऊँचे स्थान पर करें।
- चारागाह/बाड़े की साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें। समय-समय पर फर्श व दीवारों पर चूने के घोल का छिड़काव करें।
- वातावरणीय तापमान में उतार-चढ़ाव से पशुओं को बचाने के उपायों पर ध्यान दें।
- दुग्ध ज्वर (Milk Fever) से दुधारु पशुओं को बचाने के लिए जुलाई माह में दीये गए उपचार का पालन करें।
- पशुओं का परजीवियों से बचाव करें। विशेष रूप से मेमनों को फड़किया (Enterotoxemia) रोग का टीका लगवाएं।
- गाय के मद (हीट) में आने के 12 से 18 घन्टे के अन्दर गाभिन करवाने का उचित समय है।
- हरे चारे की बहु-उपलब्धता के कारण पशुओं में हरे चारे के अधिक सेवन से सम्बंधित समस्याओं से बचने के लिए, पशुओं को बाहर खुले में चरने के लिए नहीं भेजे, इससे संक्रमण होने की संभावना बढती है। लवण-मिश्रण को चारे/दाने के साथ दें।
- हरे चारे से साईलेज बनाएं, अतः हरे चारे के साथ सूखे चारे को मिलाकर खिलाएं।
- बहुऋतुजीवी घासों की कटाई करते रहें; यथा आवश्यक उर्वरक, गोबर की खाद अथवा कम्पोस्ट डालते रहें।
- बरसीम व रिजका की बिजाई इस माह के अन्तिम सप्ताह में शुरु कर सकते है।
- इस माह में भेड़ के ऊन कतरने का कार्य करें।

SOUTH ASIA
Pro Poor Livestock Policy Programme
A joint initiative of NDDB and FAO

पशुपालक कैलेंडर

अक्टूबर में ध्यान देने वाली बातें

- ❖ इस माह से सर्दी का मौसम शुरु हो जाता है, अतः पशुओं का सर्दी से बचाव का उचित प्रबन्ध करें।
- ❖ पिछले माह में भेड़ के ऊन कतरने का कार्य न किया हो तो इस माह में कर लें।
- ❖ मुँहपका-खुरपका (Foot and Mouth Disease) रोग होने पर पशु के प्रभावित भाग को लाल दवा (Potassium permanganate) 1 प्रतिशत घोल से उपचारित करें।
- ❖ मुँहपका-खुरपका रोग, गलघोंटू (Hemorrhagic Septicemia), ठप्पा (Black Quarter) रोग, फड़किया (Enterotoxemia) रोग आदि के टीके यदि अभी भी नहीं लगवाएं हों, तो कृपया समय रहते लगवा लें।
- ❖ परजीवी तथा कृमि नाशक दवा/घोल देने का समय भी उपयुक्त है। परजीवीनाशक दवा को बारी बारी से बदल कर उपयोग में लें।
- ❖ चारे की सही समय पर खरीद-फरोख्त व संग्रहण पर पूरा ध्यान दें।
- ❖ पशुओं को लवण-मिश्रण निर्धारित मात्रा में दाने या बाँटें में मिलाकर दें।
- ❖ हरी घास व चारे की उपलब्धता बढ़ने पर भी पशु आहार में चारे की मात्रा नियंत्रित ही रखें, व सूखे चारे की मात्रा बढ़ा कर दें, क्योंकि हरे चारे को अधिक मात्रा में खाने से पशुओं में हरे रंग की दस्त अथवा एसिडोसिस (रक्त में अम्लता की वृद्धि) की समस्या हो सकती है।
- ❖ अधिक चारा लेने के लिए बरसीम फसल की उन्नत किस्में बी.एल.10, बी.एल.22, वरदान, जे.एच.बी. 146 व बी.एल.42 की बिजाई इस माह अवश्य कर लें।
- ❖ भेड़ के शरीर को ऊन कतरने के 21 दिन बाद, बाह्य परजीवियों से बचाने के लिये, किटाणु-नाषक घोल से भिगोएं।

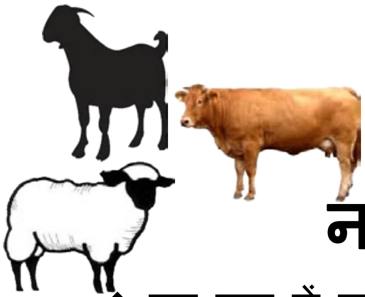

पशुपालक कैलेंडर

नवंबर में ध्यान देने वाली बातें

- ❖ इस माह में तापक्रम अचानक कम होने की स्थिति में पशुओं को सर्दी से बचाने के उपाय करने होंगें, इसके लिए रात में पशुओं को खुले में ना बांधे।
- ❖ पशुओं का बिछावन सूखा होना चाहिए तथा प्रतिदिन बदल दें।
- ❖ मुँहपका-खुरपका (Foot and Mouth Disease) रोग, गलघोंटू (Hemorrhagic Septicemia), छोटी माता (Chicken-pox), ठप्पा (Black Quarter), फड़किया (Enterotoxemia) रोग आदि के टीके यदि अभी भी नहीं लगवाएं हों, तो कृप्या समय रहते लगवा लें।
- ❖ थनैला (Mastitis) रोग से बचाव के उपाय करें।
- ❖ परजीवीनाशक दवा या घोल देने से पशुओं को परजीवी प्रकोप से बचाया जा सकता है, जिससे ना केवल पशुओं के स्वास्थ्य में सुधार होगा, अपितु जो भोजन पशु खाता है उसका शरीर में सदुपयोग होगा तथा उत्पादन बढ़ेगा।
- ❖ पशुओं को लवण-मिश्रण निर्धारित मात्रा में दाने या बाँटें में मिलाकर दें।
- ❖ चारे की सही समय पर खरीद-फरोख्त व संग्रहण पर पूरा ध्यान दें।
- ❖ बहुऋतुजीवी घासों की कटाई कर लें। इसके बाद ये सुप्तावस्था में चली जाती है, जिससे अगली कटाई तापमान बढ़ने पर फरवरी-मार्च में ही प्राप्त होती है।
- ❖ जई फसल से अधिक चारा लेने के लिए उन्नत किस्में, जैसे कि सिरसा जई 6, सिरसा जई 9, जे.एच.ओ. 822, जे.एच.ओ. 851 की बिजाई माह के मध्य से शुरु करें।
- ❖ बरसीम व रिजका की बिजाई माह के मध्य तक अवश्य पूरी कर लें।
- ❖ तीन वर्ष में एक बार पी.पी.आर. का टीका भेड़ और बकरियों को अवश्य लगवाएं।
- ❖ भेड़ के शरीर को ऊन कतरने के 21 दिन बाद, बाह्य परजीवियों से बचाने के लिये, किटाणु-नाषक घोल से भिगोएं।

SOUTH ASIA
Pro Poor Livestock Policy Programme
A joint initiative of NDDB and FAO

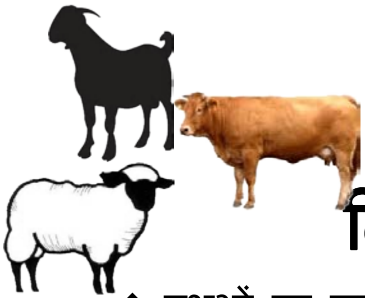

पशुपालक कैलेंडर

दिसंबर में ध्यान देने वाली बातें

- पशुओं का सर्दी से बचाव का उचित प्रबन्ध करें। रात में पशुओं को अंदर गर्मी वाले स्थान, जैसे कि छत के नीचे या घास-फूस की छप्पर तले बांधें।
- मुँहपका-खुरपका (Foot and Mouth Disease) रोग, गलघोंटू (Hemorrhagic Septicemia), भेड़ चेचक (Sheep Pox), फड़किया (Enterotoxemia) रोग आदि के टीके यदि अभी भी नहीं लगवाएं हों, तो कृपया समय रहते लगवा लें।
- पशुओं को खनिज लवण-मिश्रण निर्धारित मात्रा में दाने या बाँटें में मिलाकर दें।
- दुधारु पशुओं को थनैला (Mastitis) रोग से बचाने के लिए पूरा दूध निकालें, और दुध दोहने के बाद थनों को कीटाणु नाशक घोल में धो लें।
- पशु आहार में हरे चारे की मात्रा नियंत्रित ही रखें, व सूखे चारे की मात्रा बढ़ा कर दें, क्योंकि हरे चारे को अधिक मात्रा में खाने से पशुओं में दस्त इत्यादी की समस्या हो सकती है।
- यदि इस समय वातावरण में बादल नहीं है, और पशुओं को खिलाने के पश्चात अतिरिक्त हरा चारा बचा हुआ हो, तो उसे छाया में सुखाकर 'हे'(सूखी घास) के रुप में संरक्षित करें।
- बिजाई के 50-55 दिन के बाद बरसीम, एवं 55-60 दिन बाद जई की चारे के लिए कटाई करें। इसके पश्चात बरसीम की कटाई 25-30 दिन के अन्तराल पर करते रहें।
- दिसम्बर की चटकीली धुप में चारा प्रदान करने वाले वृक्षों की छंटाई के बाद पत्तियों आदि को छाया में सुखाकर गर्मी के मौसम में जब कम चारा उपलब्ध रहता है, उस समय पशुओं को खिलाने के लिए संग्रहण करें।

SOUTH ASIA
Pro Poor Livestock Policy Programme
A joint initiative of NDDB and FAO

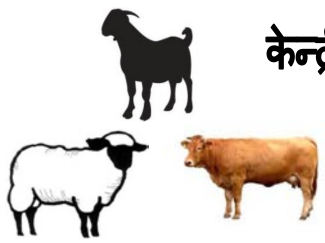

केन्द्रीय भेड़ और ऊन अनुसंधान संस्थान, अवीकानगर, टौंक, राजस्थान द्वारा अपनायी गयी मॉडल स्वास्थ्य अनुसूची

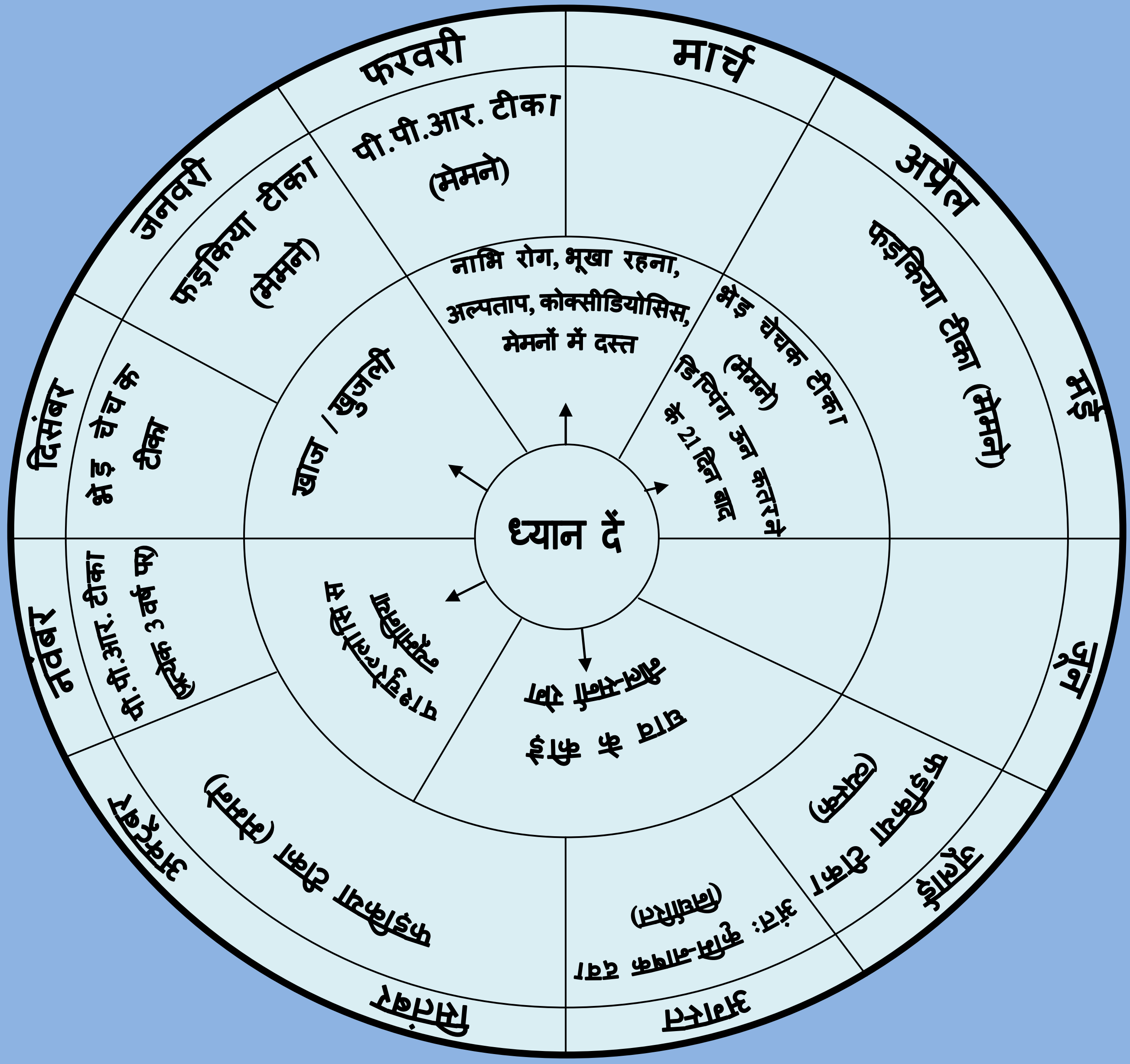

स्रोतः पशुपालन, डेयरी और मत्स्यपालन विभाग, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा जारी किया गया भेड़ और बकरी पालन पर सलाहकार।

स्रोतः राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविधालय, बीकानेर; केन्द्रीय भेड़ और ऊन अनुसंधान संस्थान, अवीकानगर, टौंक, राजस्थान; पशुपालन, डेयरी और मत्स्यपालन विभाग, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार; और एस.ए.पी.पी.एल.पी.पी. के द्वारा प्रकाशित सूचना के अनुसार।

डिज़ाइन और रचनाः शीला कोयाना, एस.ए.पी.पी.एल.पी.पी.

फोटो क्रेडिटः आगा खान रूरल सपोर्ट प्रोग्राम (इन्डिया), फाउंडेशन फोर इकोलोजिकल सेक्यूरिटी, सुधा वासन, और एस.ए.पी.पी.एल.पी.पी.

प्रकाशकः एस.ए.पी.पी.एल.पी.पी., 2014
©एस.ए.पी.पी.एल.पी.पी. (http://sapplpp.org/copyright)

अस्वीकरण: शिक्षा और गैर-वाणिज्यिक प्रयोजनों के लिए इस अध्ययन से उपलब्ध जानकारी का उपयोग और प्रसार कॉपीराइट धारकों से किसी भी पूर्व लिखित अनुमति के बिना अधिकृत है, बशर्ते स्रोत पूरी तरह से अभिस्वीकृत किया जाए। पुनर्विक्रय या अन्य वाणिज्यिक प्रयोजनों के लिए इस अध्ययन से उपलब्ध जानकारी का उपयोग कॉपीराइट धारकों से पूर्व लिखित अनुमति के बिना निषिद्ध है।

SOUTH ASIA
Pro Poor Livestock Policy Programme
A joint initiative of NDDB and FAO
NDDB House, 6th Floor, Safdarjung Enclave, New Delhi 110 029
Telephone: +91 11 26197649, 26197851, E-mail: sapplpp@sapplpp.org, Website: www.sapplpp.org